ISSN:

RESONET : AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY OPEN ACCESS JOURNAL (RESONET-RIMOAJ)

Volume : 1 Issue: 01 | December 2025

डॉ.जेबा रशीद के साहित्य में इस्लाम दर्शन

[१]प्रा. रहिसा मिर्झा, [२]प्रा. डॉ. हाशमबेग मिर्झा

[१]सोलापुर सोशल आर्ट्स ऍण्ड कॉमर्स कॉलेज, सोलापुर.,

[२]आर्ट्स,सायन्स, कॉमर्स कॉलेज, नलदुर्ग,जि. धाराशिव

सार –

अपने देश में अनेक धर्म और संस्कृतियों हैं। भारत में इस्लाम एक अल्पसंख्यक समुदाय का है। इस्लाम धर्म की संस्कृति में मानवतावाद और यथार्थवाद को महत्व दिया गया है। भारत में सूफी काव्य परंपरा से हिंदी साहित्य में इस्लाम दर्शन दिखाई देता है।इस्लामिक दर्शन में मानव हित को सर्वश्रेष्ठ माना हैं।सूफीवाद ने मुस्लिम समाज के निर्माण में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । इस्लाम के संस्थापक पैगंबर मोहम्मद ने 'कुरान' के आदेशों का ईमानदारी से पालन करने का आदेश दिया है। आधुनिक विज्ञान-तंत्रज्ञान के युग में शिक्षा, सच्चाई, शांति, न्याय, स्वतंत्रता, स्त्री-पुरुष समानता, नैतिकता, मानवता आदि को अपनाने की आवश्यकता है।इन सभी बातों का पालन करने का आदेश 'कुरान' में दिया गया है। समाज में जब-जब अन्याय, अत्याचार को बढ़ावा मिलता है,तो उस समय धार्मिक आदेशों का पालन करना उस समाज के लिए हितकारक होता है। हिंदी साहित्य में अमीर खुसरो से लेकर असगर वजाहत तक के साहित्यकारों ने अपने साहित्य में इस्लाम दर्शन को व्यक्त किया है। साठोत्तरी लेखिका डॉ.जेबा रशीद हिंदी और राजस्थानी भाषा में साहित्य लेखन करने वाली चर्चित लेखिका है। डॉ.जेबा रशीद ने अपने साहित्य के माध्यम से इस्लाम धर्म के तत्वों को स्पष्टता से व्यक्त करने का प्रयास किया है।लेखिका ने मुस्लिम समाज के स्त्रियों पर होने अत्याचार और अन्याय को 'कुरान' का संदर्भ देकर मुस्लिम स्त्रियों को तथा भारतीय समाज को सजग किया है।

बीज शब्द - जेबा रशीद, मुस्लिम साहित्यकार, इस्लाम दर्शन, हिंदी साहित्य आदि।

आमुख –

आधुनिक हिंदी साहित्य में गुलशेरखां सानी, राही मासूम राजा,अब्दुल बिस्मिल्लाह, बंदीउज्जमा, असगर वजाहत,मेहरुन्निसा परवेज,नासिरा शर्मा,जेबा रशीद आदि ने अपने साहित्य में इस्लाम दर्शन को चित्रित किया है।डॉ.जेबा रशीद ने अपने साहित्य में 'कुरान' का आधार लेकर मुस्लिम महिलाओं के लिए जो अधिकार है।उसे अपने साहित्य में व्यक्त किया है। लेखिका अपने साहित्य के माध्यम से बताना चाहती है कि मुस्लिम समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था नहीं है लेकिन भारतीय मुस्लिम स्त्रियों को यह अधिकार प्रयोगिक तत्वों पर नहीं मिलता

है।यह कहा जाता है, 'मां के कदमों के नीचे जन्नत है' इसका भी पालन नहीं किया जाता।औरत अपने अस्तित्व के लिए आज भी संघर्षरत है।मुस्लिम महिलाएं 'कुरान' में दिए गए अधिकारों की जानकारी नहीं रखती।उनकी गरीबी और अज्ञानता के कारण मुस्लिम स्त्री की स्थिति और भी खराब हुई है मुस्लिम परिवारों में स्त्री की स्थिति अत्यंत पिछड़ी एवं दयनीय है मुस्लिम परिवारों में शिक्षा की कमी, पिछड़ापन,घर के बाहर जाने की पाबंदी,स्त्री पुरुष समानता,आदि समस्याओं को डॉ.जेबा रशीद ने अपने साहित्य में व्यक्त किया है।हजरत मोहम्मद पहले फेमिनिस्ट थे।जिन्होंने हजारों साल पहले महिलाओं का सम्मान करते थे।तत्कालीन समय में लड़कियों को जिंदा दफनाया जाता था।हुजूर साहब ने इस घृणित कृत्य के खिलाफ आवाज उठाई थी।वह अपने बेटी का इतना आदर करते थे। उसके आने पर अपनी जगह छोड़कर खड़े हो जाते थे।लेखिका ने इस बात के आधार पर 'चिनगारी' कहानीसंग्रह में व्यक्त किया है,"बेटियां तो अजीम होती है,खुदा के घर की रहमत...। इस्लाम में जितने बंधन औरतों पर डाले गए हैं।उतने ही बंधन पुरुषों पर भी हैं।इस बात को लेखिका ने इस प्रकार से स्पष्ट किया है,"घूंघट में हो या बुर्के में मर्द अपनी आंखों में किस तरह एक्सरे मशीन फिट करके रहा चलते लड़कियों को देखता फिरता है।लड़कियां कुछ भी पहने, क्या मर्द का फर्ज नहीं अपने नजरे काबू में रखें?"इस्लाम में बेटी की शादी उसकी मर्जी से होने चाहिए। इस बात को लेकर लेखिका ने 'इश्क हुआ' इस उपन्यास में बेटी के इजाजत के बगैर एक पिता अपनी बेटी का रिश्ता तय नहीं करता सकता।लेखिका लिखती है,"आपको निकाह कबूल है काशिफ का पुरा हवाला बताकर काजी साहब ने पूछा।...सुरैया बानो आपको काशिफ के साथ एक लाख मेहर निकाह कबूल है।"काजी साहब जब बेटी को पूछते हैं तो कोई जवाब ना मिला। वहां पर उपस्थितों में से किसने कहा भाई साहब अपने धर्म में तो लड़की को अपने मनपसंद लड़के से शादी करने का हक है। उस पर उसके पिताजी बहुत चिढ़ जाते हैं।लेखिका लिखती है,"मैं इसका निकाह दूसरे के साथ नहीं होने दे दूंगा! देखो कौन करता है इससे निकाह कासिप क्रोध में लाल-पीला होकर चारों ओर देखकर बोला,किसमें हिम्मत है इससे निकाह करने की...! लेखिका में एक औरत पात्र के माध्यम से लिखती है,"लो,रहने दो अपने दादागिरी... जबरदस्ती तो निकाह हो नहीं सकता! निकाह लड़की की इच्छा से ही हो सकता है।यह हक तो इस्लाम में लड़कियों को मिला है।"इस बात पर लड़की के पिताजी चुपचाप खामोश बैठ जाते हैं और अपने बेटी की शादी उसके पसंद के लड़के के साथ करवाते हैं।लेखिका ने 'कंटीली राहें' इस कहानीसंग्रह की कहानी 'तपती रेत' में मुस्लिम स्त्री की वास्तविक दशा को व्यक्त किया है।'तपती रेत' की नायिका अनारो को जब उसका पति तलाक देने की बात करता है तो लेखिका लिखती है,"मैंने निकाह किया है।मैं हवेली से नहीं जाऊंगी।वह जिद पर अड़ गई...उसने ने निकाह किया है... अब खुदा रसूल का वास्ता देकर तलाक दे रहा है।इतना

मैं समझ गई हूं कि जागीरदार ने निकाह क्यों पढा, ताकि आसानी से तलाक दे सके।'कुरान' शरीफ में लिखा है, बिना कारण तलाक नहीं हो सकता।मैं ऐसे तलाक को क्यों मानूं जो धोखे से दिया जा रहा है।"लेखिका नायक को बताते हुए लिखती है,"तलाक देने का हक तो खुदा ने औरत को भी दिया है।पर औरत ने कभी बिना कारण पति को तलाक नहीं दिया।सब कुछ सहकर भी छली जाती रही पर अब कब तक छली जाएगी औरतें...?"

'क्योंकि औरत ने प्यार किया'...इस उपन्यास में नायिका पढ़ी-लिखी है।वह पेशे से डॉक्टर है।वह शादी करके ससुराल जाती है,तो उसका पति रेहान अच्छा बर्ताव नहीं करता।लेखिका लिखती है," सफाई से लेकर भोजन बनाने तक अगर तुम खुशी चाहती हो तो सब खुशी से सीख लोगी... नहीं तो दूसरा रास्ता तलाक है। वह इस बात से बहुत डर जाती है और नाराज हो जाती है।वह अपने माता-पिता के लिए सब कुछ बर्दाश्त करते हैं।वह अपने मायके वालों सब कुछ सह लेती है।इस बात पर लेखिका लिखती है,"यह कैसा हक दिया है,खुदा तूने जिसे हर पति फायदा उठाकर पत्नी पर मनमानी करता है।हम औरतें भी तो तुझे फरियाद कर सकते हैं तूने तो हमें भी बराबरी का हक दिया है।"इस उपन्यास की नायिका अपने हक का साहरा लेकर अपना जीवन जीते दिखाई देती है। 'रिश्ते क्या कहलाते हैं' इस कहानीसंग्रह में डॉ.जेबा रशीद मुस्लिम समाज में घरेलू औरतों को किस प्रकार से परेशान किया जाता है। इसका वास्तविक चित्र 'उसके खातिर' इस कहानी में चित्रित किया है।लेखिका लिखती है,"आज घर की सफाई ढंग से नहीं की।बस सजने संवरने के अलावा तुम्हें कोई काम नहीं आता।मेरा बटन टूट गया, लगा नहीं सकती थी... मेरे जूते की पॉलिश अच्छे नहीं की...पॉलिश जमकर करने में तुम्हारी खूबसूरत हाथ तो घीस तो नहीं जाते।सब्जी में नमक मिर्च सही नहीं डाल सकती तुम्हारा ध्यान शीशे पर नहीं किचन में रहना चाहिए।अच्छे सूरत से क्या होता है मैडम सुंदर होने से पेट नहीं भरता।... तुमको अपनी सुंदरता पर नाज है ना मैं थूकता हूं तुम्हारी सुंदरता पर नहीं चाहिए मुझे सुंदर बीवी... उसके खातिर इस कहानी के नायक ओवेस के दुख देने वाले बातों से नीला तंग आ गई थी।वह बार-बार नीला को ताने मारता था। लेखिका लिखती है,"तीन बार तलाक के शब्दों का पुलिंदा थमाकर ओवेस उसको पीहर पहुंचा गया।"नीला इस बात से बिल्कुल पागल हो गई।लीला के माता-पिता ने अच्छे डॉक्टर को घर बुलाकर नीला का इलाज करवाया।उसडॉक्टर का नाम था नफीस। नफीस ने नीला को उसके पति कि हादसे से बाहर निकालने की बहुत कोशिश की।वह उसे बताता है कि हादसों से घबराकर जिंदगी बर्बाद नहीं की जाती।नफीस नीला वह चाहने लगा था। उसे उसकी आदतें बहुत अच्छी लगती थी।वह उसे कहता था कि तुम पहले लड़की हो जो मुझे अच्छी लगने लगी हो। तुम्हारी सादगी को मैं पसंद किया है मैं तुमसे मोहब्बत करने लगा हूं।नीला को ओवेस ने तलाक दिया है।नीला की मां ने नफीस के साथ शादी करने की इजाजत देती है।

दोनों में प्रेम पनपता है। एक दिन अचानक से ओवेस बेटी को मिलने के बहाने मिल के नीला के पास आता है। वह बार-बार नीला से माफी मांग रहा था।अपने किए पर पछताते भी है।वह कहता है तुम्हें डांटने परेशान करने के बाद मुझे ऑफिस में दिल नहीं लगता था मेरा दिल करता घर जाकर तुम्हें गले लगा कर माफी मांगू। ओवैस के ऐसी बातें सुनकर नीला उसे पर रहम खाती है लेखिका लिखती है,"किसी और से शादी करके तलाक देना बहुत बड़ी बात है कौन करेगा ऐसा।"नीला अपने धर्म के अनुसार सोचने लगते हैं और यह बात डॉक्टर नफीस के सामने रखती है।वह कहती है आप तो डॉक्टर है आपने मुझे ठीक किया है यह एहसान है मुझ पर अब एक एहसान और करो यह शादी भी इलाज का एक हिस्सा ही समझो।इस बात पर नील की एक शर्त है की शादी के दो दिन बाद में तलाक देंगे। नफीस शादी के बात को तो तैयार होता है। लेखिका लिखती है," मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूंगा। दो दिन में तलाक भी दे दूंगा... मैं तुम्हारे हर इच्छा पूरी करूंगा... तुम क्या जानो मैं तुम्हें दिल से चाहा है। एक बार सोच लेना क्या ओवेस हलाला सह पायेगा।"नीला नफीस के बातों पर सोचने लगी।सचमुच किसी से शादी होने के बाद ओवेस सह पाएगा किसी ने मुझे छुआ है या किसी के साथ में रहकर आई हूं। इस द्वंद्व में नीला खो जाती है।दोनों पुरुषों के बातों से तथा सामाजिक बंधनों से नीला परेशान हो गई।नफीस सच्चा प्रेम करता था।वह नीला के लिए अपने प्यार की कुर्बानी देने लगा था।नीला समाज के बातों को सामने रखकर अपने पति के साथ रहने का निर्णय लेती है।वह अपने बच्चों को अपने पति का नाम देना चाहती है।अपने दिल का दर्द वह न ओवेस को बता पाती है न ही नफीस को दोनों के बीच वह अपने भावनाओं को कुचलकर अपनी जान देती है।दो पुरुषों ने एक निस्वार्थ औरत की जान ले ली। एक ने उसे नफ़रत और फर्ज अदा करने के बारे में और एक ने की जान से प्यार करके।लेखिका का बताना चाहती है कि नीला अपने धर्म के अनुसार सब रीति रिवाज को निभाकर भी अपना जीवन बिताना चाहते हैं तो भी पुरुष उसे स्वीकार नहीं कर सकता।

निष्कर्ष-

डॉ. जेबा रशीद ने अपनी साहित्य में मुस्लिम महिलाओं के लिए 'कुरान' में लिखित तत्वों को अपनाने की सलाह देती है।जो आज भी अनेक महिला इन बातों से अनजान है। लेखिका ने वर्तमान परिवेश में पारिवारिक,सामाजिक और धार्मिक समीकरणों में परिवर्तन लाने की सलाह अपने साहित्य के माध्यम से देने का प्रयास किया है।लेखिका ने समाज का एक अभिन्न अंग स्त्री को समाज में मान्यता प्रताड़ना अनचाहे अनगिनत बंधनों पर प्रहार करने का प्रयास लेखिका करती हुई दिखाई देती है।सैद्धांतिक दृष्टि से मुस्लिम स्त्रियों की स्थिति

बहुत ही सदृढ़ है परंतु व्यावहारिक रूप से उनकी स्थिति आज भी दयनीय है। लेखिका ने सभी धर्म,धर्मग्रंथऔर धर्मगुरु के बारे में औरत के स्थिति को लेकर लिखती है,

"कितने कटघरे हैं
है कितनी अदालते,
फिर भी अन्याय से घिरी है हम
कितने हैं ईश्वर अल्लाह
है मूसा और गुरु
फिर भी कितना है अधर्म
देश में है पूरी आजादी
कितने खुंटो से बंधी है हम।"

संदर्भ

1.जेबा रशीद- क्योंकि औरत ने प्यार किया (उपन्यास)

2.जेबा रशीद -इश्क हुआ (उपन्यास)

3. जेबा रशीद -कंटीली राहें (कहानीसंग्रह)

4.जेबा रशीद -रिश्ते क्या कहलाते हैं (कहानीसंग्रह)